

प्यारे श्याम सुकुमार मेरे जीवन आधार

मानो कहना हमार नंहि करियो माखन चोरी ॥

गोपी आती उरहना लाके तेरे ऊधम की बातें सुनाके

सब करती हैं रारि और देती हैं गारि—नंहि ॥१॥

सुनि बतियां तेरी लाज आवे यह चाल न मोकूं सुहावें

कैसो पिता है तुम्हार कर देखियु विचार—नंहि ॥२॥

हाट बाट की बेचन हारी बड़ी डीठ है बृज की नारी

देती दोष हैं हज़ार कर कर के पुकार—नंहि ॥३॥

घर बहुत हैं माखन तेरे जो चाहो सो देऊं सवेरे

बृजराज के कुमार तोपे जाऊं बलहार—नंहि ॥४॥

मैया गोपी सभी लड़नहारी पकड़ रस्ते में देती हैं गारी

कहें यशोदा दुलार दो बाप के कुमार—नंहि करता ॥५॥

पूछो चलकर कोकिल साईं करे सतिसंग वृज में सदाई
सीखा वहां सदाचार बना गुणों का भण्डार—नहि करता ॥६॥